ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(9): 824-826
www.allresearchjournal.com
Received: 21-07-2016
Accepted: 22-08-2016

दिलप्रीत कौर बेदी
मनोवैज्ञानिक बिलासपुर,
छत्तीसगढ़ (भारत)

डॉ दीपक पाण्डेय
मनोवैज्ञानिक बिलासपुर,
छत्तीसगढ़ (भारत)

Correspondence
डॉ दीपक पाण्डेय
मनोवैज्ञानिक बिलासपुर,
छत्तीसगढ़ (भारत)

शहरी एवं ग्रामीण उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र-छात्राओं में आत्म संप्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन

दिलप्रीत कौर बेदी, डॉ दीपक पाण्डेय

सारांश
इस अध्ययन का उद्देश्य ग्रामीण एवं नगरी उ. मा. शलाओं के छात्र/छात्राओं में आत्म संप्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन करना था। जिसमें यह शून्य उपकल्पना बनाई गई कि "ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के आत्मसंप्रत्यय में कोई अंतर नहीं है।" इस अध्ययन हेतु ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के उ. मा. विद्यालयों का चयन कर 12 वीं कक्षा के 120 विद्यार्थियों जिनमें 60 छात्र व 60 छात्राएँ है, का आकस्मिक प्रतिचयन विधि से चयन किया गया। उन विद्यार्थियों पर एस. पी. अहलूवालिया (1986) द्वारा निर्मित "बालक आत्मसंप्रत्यय मापनी" को प्रशासित कर आत्मसंप्रत्यय ज्ञात किया गया। व प्राप्तांको का विश्लेषण कर टी मूल्य ज्ञात किया तथा .01 व .05 स्तर पर दोनों क्षेत्र के विद्यार्थियों में अंतर की सार्थकता की जाँच की और पाया गया कि ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के छात्र/छात्राओं के आत्मसंप्रत्यय में अंतर होता है।

शब्द कुंजी: आत्म संप्रत्य, टी परिक्षण, परिवेश, विद्यार्थी

प्रस्तावना
आज का युग आधुनिक तथा अति प्रतिस्पर्धात्मक है, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति के पास गुणों तथा योग्यताओं का असीमित भंडार है। आज प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में कोई विशेष गुण अथवा प्रतिभा रखता है तथा साथ ही यह सर्वविदित है, कि विश्व में प्रत्येक व्यक्ति बौद्धिक व्यक्तित्व तथा मनोवैज्ञानिक गुणों में एक दूसरे से भिन्न होता है। यह योग्यताएं तथा गुण मानव संसाधन के रूप में किसी न किसी तरह से समाज में पहुँचती है तथा उसके विकास में महत्वपूर्ण भूमिकायें निभाती है। प्रत्येक व्यक्ति एक स्वतंत्र अस्तित्व के लिए संघर्ष करता है, जिसमें छात्र जीवन सर्वाधिक गतिशील रहता है। व्यक्ति के व्यवहार, योग्यताओं व गुणों के संबंध में उसी अभिवृत्ति निर्णयों व मूल्यों का योग आत्म प्रत्यय कहलाता है, (आइजनेक, 1972)। छात्र जीवन में आत्म संप्रत्यय महत्वपूर्ण स्थान रखता है, जो उसकी बहुत सी क्षमताओं का निर्धारण करता है तथा व्यक्तितव का निर्माण होता है। बालक के आत्म संप्रत्यय के विकास में विद्यालय महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। सामान्यतः बालक और बालिकाओं के आत्म संप्रत्यय में अंतर पाया जाता है (सारबिन एवं रोजनवर्ग, 1955)। लिंगानुसार भूमिकाओ का प्रभाव आत्म संप्रत्यय पर देखा जा सकता है, (हाफमैन एवं मैरी 2005)। सामान्यतः उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर वाले बालक/बालिकाओं का आत्म संप्रत्यय उच्च होता है (नोर्मा,1972)। धर्म और सामाजिक वर्ग का प्रभाव आत्म संप्रत्यय पर पड़ता है, (रिचर्ड एवं रार्बट, 1988)। संस्कृति की विभिन्नताओ का प्रभाव आत्म संप्रत्यय पर देख जा सकता है, (धवन एवं नायडू, 1995)। व्यक्तियों में आत्म–स्वीकृति अधिकता व्यक्तिगत समायोजनशीलता को मज़बूती प्रदान करती है (मेरिस, 1958)। जीवन के प्रारभिंक वर्षो में आत्म संप्रत्यय अस्थिर देखी जा सकती परंतु आयु बढ़ने के साथ–साथ उसमें स्थिरता आती है (लाइवली, 1962)। आत्म संप्रत्यय मे अस्थिरता, विभिन्न क्षेत्रों के समायोजन मे दुर्बलता प्रदान करती है (हरटप, कोट्स एवं कैटल, 1967)। व्यक्ति के आत्म संप्रत्यय की शुद्धता (Accuracy) उसके जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के समायोजन को सार्थक रुप से प्रभावित करती है। आत्म संप्रत्यय व्यक्ति के विचारों और अनुभव से परिवर्तित होते रहते है, अतः आत्म संप्रत्यय भी परिवर्तित होता रहता है (जरसील्ड, 1971)। जब व्यक्ति की उपलब्धि और उसके लक्ष्य में अंतर अधिक होता है तब उसका आत्म संप्रत्यय ऋणात्मक रूप से प्रभावित होता है, (मरगोरी, 1979)। व्यक्ति जितना ही कम आक्रामक होता है, उसका आत्म संप्रत्यय उतना ही अधिक उच्च होता है, (थॉमस 1982)। किशोरों के आत्म संप्रत्यय को कुण्ठा तथा कुण्ठा के विभिन्न मोड्स महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करते है, (दीक्षित, 1985)। विद्यालयी परिवेश बालक के आत्म संप्रत्यय को प्रभावित करता है।

ग्रामीण परिवेश व शहरी परिवेश में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्म संप्रत्यय व ग्रामीण परिवेश व शहरी परिवेश में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्म संप्रत्यय के विकास पर उनके परिवेश का प्रभाव पड़ता है। गांव व शहर की संरचना, परिवेश, रहन–सहन शिक्षा, आर्थिक स्थिति बालक के आत्म संप्रत्यय को प्रभावित करते है, व उसी के अनुरूप उसका आत्म संप्रत्यय विकसित होता है।
इस अध्ययन मे निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाएँ सम्मलित कि गई है–

Ho 1- "ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र में अध्ययनरत बालकों के आत्म संप्रत्यय में कोई अंतर नहीं होगा।"

Ho2- "ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र में अध्ययनरत बालिकाओं के आत्म संप्रत्यय में कोई अंतर नहीं होगा।"

Ho 3- "शहरी क्षेत्र के बालक और बालिकाओं के आत्म संप्रत्यय में कोई अंतर नहीं होगा।"

Ho 4- "ग्रामीण क्षेत्र के बालक एवं बालिकाओं के आत्म संप्रत्यय में कोई अंतर नहीं होगा।"

Ho 5- "शहरी क्षेत्र के बालक एवं ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं के आत्म संप्रत्यय में कोई अंतर नहीं होगा।"

Ho 6- "ग्रामीण क्षेत्र के बालक और शहरी क्षेत्र की बालिकाओं के आत्म संप्रत्यय में कोई अंतर नहीं होगा।"

Ho 7- "ग्रामीण एवं शहरी में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्म संप्रत्यय में कोई अंतर नहीं होगा।"

क्रियाविधि

प्रतिदर्श

प्रस्तुत अध्ययन में बिलासपुर जिले के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र मे विद्यमान के 10 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों को सम्मिलित किया गया है, विद्यालयों का चयन यादृच्छिकरण विधि के माध्यम से किया गया है। इन विद्यालयो से पुनः यादृच्छिकरण विधि से ग्रामीण बालक 30, ग्रामीण बालिका 30, शहरी बालक 30, शहरी बालिका, 30 कुल 120 प्रतिभागियों का चयन किया गया है।

उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में आत्मसंप्रत्यय मापनी (cscs), एस. पी. अहलूवालिया 1986 का उपयोग किया गया है। इस उपकरण मे 30 प्रश्न एवं 6 आयाम Behaviour, Intellectual and school status, Physical Apearance and Attributes, Anxiety, Popularity, Happiness and satisfaction का मापन करते है। इस उपकरण की परीक्षण पुनः परीक्षण. 85 एवं अर्द्ध विच्छेद. 76 विश्वसनीयता है।

परिणाम एवं विवेचना

प्रस्तुत अध्ययन की शुन्य परिकल्पनाओं की जाँच करने हेतु टी. परीक्षण (t- Test) का उपयोग किया गया है।

शून्य परिकल्पना – 1

"ग्रामीण क्षेत्र व शहरी क्षेत्र में अध्ययनरत् बालकों के आत्मसंप्रत्यय में कोई अंतर नहीं होगा।"

तालिका क्रमांक–1 के अनुसार यह उपकल्पना -05 विश्वास स्तर पर निरर्थक सिद्ध होता है। अतः स्पष्ट होता है, कि ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में अध्ययनरत् बालकों के आत्मसंप्रत्यय में अंतर होता है। गांव के बालकों की तुलना में शहर के बालकों का आत्म संप्रत्यय अधिक धनात्मक व विकसित होता है। इसका कारण यह है, कि शहर के बालकों को प्रारंभ से ही पूरी सुविधाएँ मिलती है। जहाँ उन्हें शिक्षा के लिए प्रेरित किया जाता है, उनका आत्म विश्वास पारिवारिक वातावरण, समायोजन स्तर गाँव के बालकों से अच्छा होता है, जिससे उनमें धनात्मक आत्म संप्रत्यय विकसित होता है।

शून्य उपकल्पना – 2

"ग्रामीण क्षेत्र व शहरी क्षेत्र में अध्ययनरत् बालिकाओं के आत्म संप्रत्यय में कोई अंतर नहीं होगा।"

तालिका क्रमांक–1 के अनुसार यह उपकल्पना -05 विश्वास स्तर पर निरर्थक सिद्ध हुई। अतः सिद्ध होता है, कि ग्रामीण क्षेत्र व शहरी क्षेत्र में अध्ययनरत् बालिकाओं के आत्म संप्रत्यय में अंतर होता है। शहर की बालिकाओं को गाँव की बालिकाओं की तुलना में अधिक सुविधाएँ प्राप्त है। गाँव की बालिकाएँ आज भी शिक्षा के क्षेत्र में पीछे है, उन्हें पढ़ने के लिए माता–पिता भी उतना प्रोत्साहित नहीं करते। माता–पिता के व्यवहार का भी प्रभाव उनके आत्म संप्रत्यय पर पढ़ता है, गाँव की लड़कियाँ अपने आपको हर क्षेत्र में कम समझती है, जिससे उनमें आत्म संप्रत्यय अपेक्षाकृत कम होता है।

शून्य उपकल्पना – 3

"शहरी क्षेत्र के बालक और बालिकाओं के आत्मसंप्रत्यय में कोई अंतर नहीं होगा।"

तालिका क्रमांक–1 के अनुसार यह उपकल्पना -05 विश्वास स्तर पर निरर्थक सिद्ध होती है। अतः स्पष्ट है कि शहर के बालक और बालिकाओं के आत्मसंप्रत्यय में अंतर होता है। बालकों की अपेक्षा बालिकाओं का आत्मसंप्रत्यय अधिक धनात्मक पाया गया। वह अपने आप को अधिक व्यावहारिक समझती है। उनका आत्म संप्रत्यय बालकों की अपेक्षा धनात्मक है।

शून्य उपकल्पना – 4

"ग्रामीण क्षेत्र के बालक और बालिकाओं के आत्मसंप्रत्यय में कोई अंतर नहीं होगा।"

तालिका क्रमांक–1 के अनुसार यह उपकल्पना .05 विश्वास स्तर पर असत्य सिद्ध होती है। ग्रामीण क्षेत्र के बालक एवं बालिकाओं के आत्मसंप्रत्यय में अंतर है, पर यह अंतर आंशिक है गाँव के बालकों का आत्मसंप्रत्यय गाँव की बालिकाओं की तुलना में अधिक धनात्मक पाया गया। गाँव में बालकों के शिक्षा का प्रतिशत बालिकाओं की तुलना में अधिक है। यहाँ माता–पिता बालकों के अध्ययन पर अधिक रूचि लेते है। बालिकाएँ घर के कार्यों में ज्यादा व्यस्त रहती है, जिससे उन्हें पढ़ने का पूर्ण माहौल नहीं मिल पाता, जिससे उनका आत्मसंप्रत्यय अधिक विकसित नहीं होता है। आत्मसंप्रत्यय के 6 क्षेत्रों में बालकों का आत्मसंप्रत्यय सभी क्षेत्रों में बालिकाओं से अधिक रहा।

तालिका क्र- 1 (टी– मूल्य तालिका)

चर	स्तर	मध्यमान	मानक विचलन	डी. एफ.	टी– मूल्य	सार्थकता .05 स्तर पर
बालक						
परिवेश	शहरी	39.2	4.4	58	4.5	सार्थक
	ग्रामीण	49.1	7.2			
बलिका						
परिवेश	शहरी	36	0.2	58	7.6	सार्थक
	ग्रामीण	58.6	2.9			

शहरी						
लिंग	बालक	49.13	8.3	58	2.85	सार्थक
	बालिका	57	6.17			
ग्रामीण						
लिंग	बालक	39.26	4.48	58	2.30	सार्थक
	बालिका	36	3.43			
शहरी बालक एवं ग्रामीण बालिका						
परिवेश ग लिंग	शहरी बालक	49.13	8.3	58	5.7	सार्थक
	ग्रामीण बालिका	36	3.43			
ग्रामीण बालक एवं शहरी बालिका						
परिवेश ग लिंग	ग्रामीण बालक	39.27	4.48	58	8.52	सार्थक
	शहरी बालिका	57	6.17			
परिवेश						
परिवेश	ग्रामीण	37.63	4.3	118	9.99	सार्थक
	शहरी	53.7	7.8			

शून्य उपकल्पना – 5

"शहरी क्षेत्र के बालक और ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं के आत्मसंप्रत्यय में कोई अंतर नहीं होगा।"

तालिका क्रमांक–1 के अनुसार यह उपकल्पना -05 विश्वास स्तर पर असत्य सिद्ध होती है। शहरी क्षेत्र के बालक और ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं के आत्मसंप्रत्यय में अंतर होता है। शहरी क्षेत्र के बालकों का आत्मसंप्रत्यय ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की तुलना में अधिक होती है।

शून्य उपकल्पना – 6

"ग्रामीण क्षेत्र के बालक और शहरी क्षेत्र की बालिकाओं के आत्मसंप्रत्यय में कोई अंतर नहीं होगा।"

तालिका क्रमांक–1 के अनुसार यह उपकल्पना .05 विश्वास स्तर पर असत्य सिद्ध होती है। स्पष्ट है कि, ग्रामीण क्षेत्र के बालकों व शहरी क्षेत्र की बालिकाओं के आत्मसंप्रत्यय में अंतर होता है। शहरी बालिकाओं का आत्मसंप्रत्यय ग्रामीण बालकों की तुलना में धनात्मक व अधिक विकसित होता है। आत्मसंप्रत्यय के विभिन्न क्षेत्रों में शहरी बालिकाओं का आत्मसंप्रत्यय ग्रामीण बालकों से अधिक है।

शून्य उपकल्पना – 7

"ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के आत्मसंप्रत्यय में सार्थक अंतर नहीं होगा।"

तालिका क्रमांक–1 के अनुसार यह उपकल्पना -05 विश्वास स्तर पर असत्य सिद्ध होती है। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में अध्ययनरत् विद्यार्थियों क आत्मसंप्रत्यय में अंतर होता है। ग्रामीण विद्यार्थियों का आत्मसंप्रत्यय शहरी विद्यार्थियों के आत्मसंप्रत्यय की तुलना में ऋणात्मक होता है। ग्रामीण विद्यार्थियों का आत्मसंप्रत्यय उतना विकसित नहीं होता, जितना शहरी विद्यार्थियों का होता है। ग्रामीण विद्यार्थियों को पूर्ण सुख–सुविधाएँ प्राप्त नहीं हो पाती। वहाँ शिक्षा का उतना अच्छा प्रबंध नहीं है जितना शहरी क्षेत्र में है। माता–पिता भी बच्चों की शिक्षा में उतनी रूचि नहीं लेते है। शिक्षक भी विद्यार्थियों को पढ़ाने में रूचि नहीं लेते, जिससे ग्रामीण विद्यार्थियों में आत्मसंप्रत्यय कम विकसित होता है, जबकि शहर में विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्द्धा पायी जाती है, उन्हें घर व विद्यालय में पूर्ण सुविधाएँ प्राप्त होती है। बच्चे अपने कैरियर को लेकर बहुत जागरूक रहते है। जिससे उनका आत्मसंप्रत्यय ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक विकसित होता है।

भावी शोध हेतु सुझाव

वर्तमान अध्ययन बिलासपुर जिले के ग्रामीण/शहरी परिवेश मे विद्यमान उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र/छात्राओं पर केन्द्रित है। राज्य के अन्य राजस्व जिले में विद्यमान विभिन्न स्तर के विद्यालयीन छात्र/छात्राओं के, विभिन्न जनसांख्यिकिय, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक चरो की दृष्टि मे अध्ययन किया जा सकता है। आत्मसंप्रत्यय एवं विभिन्न मनोवैज्ञानिक चरों के मध्य सहसंबंध भी ज्ञात किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. भार्गव डॉ महेश – आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं उसका मापन (1995)
2. गुप्त रामबालू – सामान्य मनोविज्ञान सुमित प्रिंटर्स श्रीनगर, कानपुर
3. गैरिट ई. हेनरी – शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी, लुधियाना कल्याणी पब्लिशर्स
4. कपिल डा. एच के – अनुसंधान विधियाँ (1990) अर्चना प्रिंटर्स, सुभाष पुरम बोवला
5. पुरोहित डॉ. आनंद – प्रयोगात्मक मनोविज्ञान (1990) मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी
6. सिंह अरूण कुमार– व्यक्तित्व मनोविज्ञान मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स
7. वर्मा डॉ. प्रीति – आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान (1993)
8. श्रीवास्तव डॉ. डी. एम - विनोद पुस्तक मंदिर